BIHAR SHODH SAMAAGAM, VOL. 1, ISSUE 4, p.p 10-12
(2023)

जन संपर्क एंव विकास प्रशासन की सहभागिता

रोहित कुमार

परिचय :–

आज जन–सम्पर्क लोक प्रशासन के एक मुख्य विषय के रूप मे उभरा है। इसके महत्व को आधुनिक समय में किसी अन्य काल की तुलना में ज्यादा व्यापकता मिली है। इसका मुख्य कारण राज्य की प्रकृति में बदलाव कहा जा सकता है। आज 'पुलिस राज्य' के स्थान पर 'लोक –कल्याणकारी राज्य' की अवधारणा का विकास हुआ है जिससे जनता का कल्याण में राज्य की कार्य की मुख्य जिम्मेदारी बन गई है। पुलिस राज्य में राज्य के कार्य सीमित होते थे तथा प्रशासन व जनता में काफी दूरी थी। इसके साथ–साथ प्रशासक एंव जनता का सम्बन्ध मालिक एंव नौकर जैसा था। प्रशासकों का भय जनता में व्याप्त होने के कारण , इन दोनों में कोई मानवीय सम्बन्ध एंव सम्पर्क नहीं था। लोकतन्त्रा के उदय ने कल्याणकारी राज्य को भावना की जन्म दिया जिसके कारण राज्य के कार्यों में अत्याधिक विकास हुआ। राज्य के स्वरूप एंव कार्यों में परिवर्तन के फलस्वरूप प्रशासनिक सरंचनाओं को भी परिवर्तित स्थिति के अनुकूल बनाया गया। इस प्रकार राज्य के बढ़ते हुए दायित्वों ने जनता एंव प्रशासन के पूर्व सम्बन्धों में आमुलचूल परिवर्तन ला दिया और प्रशासन को जनता के अत्याधिक समीप खड़ा कर दिया। आज प्रजातान्त्रिाक व्यवस्था में सरकार की विभिन्न गतिविधियों एंव क्रिया–कलापों के सन्दर्भ में जनता को अवगत करना, प्रशासन की अहमभूत जिम्मेदारी है। अतः आज लोक प्रशासन में लोक सम्पर्क सम्बन्धी विषय अत्यन्त महत्वपूर्ण विषय बन गया है। इसके अतिरिक्त, लोक सम्पर्क सम्बन्धी मुद्दा विकासशील देशों के प्रशासन मे अति विशिष्ट स्थान रखता है क्योंकि इन देशों के प्रशासन में अति विशिष्ट स्थान रखता है क्योंकि इन देशों का प्रशासन' विकास प्रशासन' कहलाता है। इस प्रशासन का मुख्य सम्बन्ध विकासशील देशों के 'चहुँमुखी विकास' से है। अतः इसे जन–विकास हेतू अनेकानेक अल्प एंव दीर्घकालीन योजनाएं बनानी पड़ती है और इन योजनाओं की सफलता जन सहयोग पर निर्भर करती हैं। लेकिन विकास प्रशासन में जन सहयोग तभी सम्भव है जब इसके प्रोग्राम एंव योजनांए जनता की आवश्यकताओं के अनुरूप हों। जन–आवश्यकताओं का पूर्ण ज्ञान जन–सम्पर्क के माध्यम से ही सम्भव है। इस प्रकार जनता एंव विकास प्रशासन के बीच गहन सम्बन्ध स्थापित करने का शक्तिशाली साधन केवल 'जन–सम्पर्क ही है। अतः जन–सम्पर्क की विकास प्रशासन की सफलता में अहमभूत भूमिका है।

जन संपर्क एंव विकास प्रशासन :–

विकास प्रशासन द्वारा संचालित जन विकास सम्बन्धी विभिन्न नीतियों एंव कार्यक्रमों के सम्बन्ध में जनता में जागरूकता पैदा करने में , जन सम्पर्क का एक महत्वपूर्ण योगदान है। विकास प्रशासन के कार्यक्रम चाहे जितने अच्छे हो लेकिन उनके सम्बन्ध में अगर लोगों को जानकारी नहीं है तो वे उनमें बढ़ चढ़ कर भाग नहीं लेगें, जो विकास प्रशासन की विफलता का कारण बन सकते हैं क्योंकि विकास प्रशासन की सफलता जन–सहयोग पर ही निर्भर करती है। इस प्रकार विकास प्रशासन में जन–सहयोग की प्राप्ति जन–जागरूकता से जुड़ी हुई है। भारत जैसे देश में विकास प्रशासन द्वारा संचालित बहुत सारे कार्यक्रमों को जन–सम्पर्क के अभाव के परिणास्वरूप असफलता का मुहँ देखना पड़ा है। अतः विकास कार्यक्रमों को लागू करने से पहले उनके सम्बन्ध में पर्याप्त जन–जागरूकता का जनता में पैदा करना अति आवश्यक है। इस प्रकार की जन जागरूकता सम्पर्क के माध्यम से ही सम्भव है। विकास प्रशासन की सफलता इस बात पर भी निर्भर करती है कि उसके द्वारा संचालित विकासात्मक कार्यक्रम जन आकांक्षाओं के अनुरूप हों। अतः विकास सम्बन्धी कोई भी कार्यक्रम एंव नीति तैयार करने से पूर्व लोगों की इच्छाओं अपेक्षाओं एवं आकांक्षाओं की जानकारी अति आवश्यक है। ऐसा करने से विकास प्रशासन का कार्य अत्याधिक आसान हो जाता है। अगर कार्यक्रम जन आवश्यकताओं के अनुसार तैयार किए जाएं तो उनकी सफलता निश्चित हो जाती है। लोक सम्पर्क के विभिन्न उपकरण जन आकाक्षाओं एवं आवश्यकताओं की जानकारी में महत्वपूर्ण भूमिका निभातें हैं।

विकास प्रशासन के लिए जन–विकास तभी सम्भव है जब इसमें और जनता में दूरी कम से कम हो। अगर इन दोनों के मध्य यह दूरी अधिक होगी तो विकास प्रशासन का कोई भी

रोहित कुमार
शोद्यार्थी
पंडित रविशंकर विश्वविद्यालय, रायपुर

कार्यक्रम सफल नहीं हो सकता। भारत में विकास प्रशासन के विभिन्न कार्यक्रमों की असफलता का मुख्य कारण इन दोनों के मध्य दूरी ही रहा है।जनता क्या चाहती है और विकास प्रशासन उन्हें पूरा करने हेतु कैसे विकास कार्यक्रम तैयार करता है, इन दोनों बातों में तारत्मय स्थापित करना ही विकास प्रशासन की सफलता का द्योतक है। इस कार्य में जन सम्पर्क के विभिन्न, अभिकरण इस दोनों के मध्य एक समन्वयकर्ता की भूमिका निभाते हैं और दोनों को एक दूसरे के करीब लाने की चेष्टा करते है।यह न केवल विकास प्रशासन की योजनाओं एंव कार्यक्रमों की जानकारी लोगों तक पहुँचता है बल्कि लोगों की आवश्यकताओं एंव इच्छाओं की जानकारी भी विकास प्रशासन को देता है ताकि इसके कार्यक्रम जन –आवश्यकताओं के अनुरूप तैयार किए जा सकें। विकास प्रशासन के द्वारा जन विकास हेतु तैयार किए गए विभिन्न कार्यक्रमों एंव नीतियों को सफलतापूर्वक लागू करना अति आवश्यक है। लेकिन इन कार्यक्रमों एवं नीतियों को लागू करने से पहले इनके सम्बन्ध में जनता को भरपूर जानकारी देना अति आवश्यक है क्योंकि जब तक इनके विषय में विस्तृत ढ़ंग से जानेगी नही तो उन्हें स्वीकार कैसे करेगी? जनता की अनभिज्ञता भी इन विकास कार्यक्रमों को सफलतापूर्वक लागू करने के रास्ते में एक मुख्य बाधा है। इस बाधा का समाधान लोक सम्पर्क के विभिन्न अभिकरणों के माध्यम से सम्भव है। अतः लोक सम्पर्क विभिन्न विकासात्मक कार्यक्रमों एंव नीतियों को सफलता पूर्वक लागू करने के सम्बन्ध में अहम भूमिका निभाता है। विकास प्रशासन के द्वारा संचालित सामाजिक –आर्थिक कार्यक्रमों के उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए अति आवश्यक है कि जनता में उनसे सम्बन्धित कोई भ्रान्ति एंव गलतफहमी न हो। कुछ लोग गलत ढ़ंग से इन कार्यक्रमों की जानकारी जनता समक्ष रखते हैं जिससे जनता में आक्रोश पैदा हो जाता है। ऐसे समय में लोक सम्पर्क के साधन जनता को वास्तविक तथ्यों से अवगत कराते हैं और जनता के हर प्रश्न का जबाव देकर , उसकी गलतफहमियों को दूर करने में मदद करते है। विकास प्रशासन के प्रत्येक कार्यक्रम के उद्देश्यों के सम्बन्ध में स्पष्टता अत्यन्त अनिवार्य है। उदाहरण के तौर पर 1970 के दशक में जनसंख्या नियन्त्राण सम्बन्धी कार्यक्रम।विकास प्रशासन से सम्बन्धित विभिन्न कार्यक्रमों एंव योजनाओं को जनता तक पहुँचाने एंव जन–प्रतिक्रियाओं को जानने के लिए प्रेस एक महत्वपूर्ण साधन है। प्रेस की सहायता से जन–विकास योजनाओं के क्रियान्वन में आने वाली समस्याओं के सम्बन्ध में भी सरकार को समय–समय पर अवगत करवाया जाता है। इसके साथ–साथ जनता अखबार के सम्पादक को पत्रा लिखकर इन कार्यक्रमों के सम्बन्ध में अपनी प्रतिक्रियाएं जताते हैं जो अक्सर जब में प्रकाशित की जाती हैं। इसके अतिरिक्त, विकास प्रशासन के विभिन्न कार्यक्रमों एंव नीतियों का जनता तक पहुंचाने के लिए जन–सम्पर्क एवं अनेकों पत्रिाकाएं, पुस्तिकाएं, इश्तिहार एंव पैम्फलेट इत्यादि का प्रकाशन भी करती है। यह प्रकाशन सामग्री या तो निशुल्क लोगों में वितरित की जाती है, या इसके बदले में नाम–मात्रा की कीमत वसूली जाती है। इसका एकमात्रा उद्देश्य जनता का जन विकास कार्यों के सम्बन्ध में गहन जानकारी देना होता है।

· रेडियों जन सम्पर्क का एक सस्ता एंव सुलभ साधन है। समाचार पत्रा एवं प्रकाशित सामग्री तो केवल पढ़ीलिखी जनता तक ही सीमित होती है लेकिन रेडियों के कार्यक्रम तो पढ़े लिखे एंव अपनढ़ , दोनों तक भली भांति पहुंचते हैं। रेडियों के माध्यम से सरकार, विकास प्रशासन से सम्बन्धित विभिन्न कार्यक्रमों एंव योजनाओं के सम्बन्ध में समय–समय पर जानकारी जनता का तक पहुंचाती है और इन कार्यक्रमों में जन–सहयोग की अपील भी करती है। इनसे सम्बन्धित बहुत सारे अन्य कार्यक्रम भी रेडियों पर प्रसारित किए जाते हैं। इसके अतिरिक्त रेडियो प्रसारण के लिए विभिन्न विभागों जैसे कि कृषि, स्वास्थ्य, शिक्षा आदि केविशेषज्ञों की भी सेवाएं ली जाती हैं जो अपने–अपने विभाग से सम्बन्धित विकास कार्यक्रमों की जानकारी एंव सूचनाएं देते हैं।

सरकार के विकास सम्बन्धी क्रियाकलापों एंव कार्यक्रमों की जानकारी विज्ञापनों के माध्यम से भी दी जाती है। इसके लिए सरकार बहुत सारे पोस्टरों, कैलण्टरों, होल्डरों एंव इश्तिहारों का प्रयोग करती है। इन विज्ञापनों के माध्यम से सरकार पंचवर्षीय योजना, गरीबी व छुआछुत उन्मूलन कार्यक्रम, परिवार नियोजन, परिवार कल्याण इत्यादि से सम्बन्धित कार्यक्रमों की जानकारी का प्रचार एंव प्रसार करती है। ये विज्ञापन आमतौर पर सार्वजनिक स्थान जैसे कि डाकघर, सरकारी अस्पताल, रेलवे स्टेशन व बस अड्डे आदि पर लगाए जाते हैं। इन सब विज्ञापनों का मुख्य उद्देश्य विभिन्न क्षेत्राों में विकास प्रशासन द्वारा संचालित कार्यक्रमों की पूर्ण जानकारी जनता तक पहुंचाना होता है। उपरोक्त विवरण से यह स्पष्ट है कि लोक सम्पर्क विकास प्रशासन की सफलता के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण विषय

है। इसके बिना विकास प्रशासन न तो अपने कार्यक्रमों की जानकारी जनता तक पहुँचा सकता है और न ही जनता की इच्छाओं आवश्यकताओं, आकांक्षाओं तथा अपने विभिन्न कार्यक्रमों के सम्बन्ध में जनता की प्रतिक्रियाओं को जान सकता है। अतः विकास प्रशासन के लोक सम्पर्क के विभिन्न अभिकरणों का अधिक से अधिक प्रयोग अत्यन्त महत्वपूर्ण है। जन संचार एंव जन सम्पर्क के लिए समय–समय पर बहुत सारी प्रदर्शनियों का आयोजिन किया जाता है। इन प्रदशनियों में विभिन विकास सम्बन्धी कार्य एंव कार्यक्रमों के फोटो चार्ट, ग्राफ रेखाचित्रा , माडलयुक्त चित्रा आदि के माध्यम से विभिन्न प्रकार की जानकारियां जनता को प्रदान की जाती हैं। इसके साथ–साथ इन प्रदर्शनियों में जनता को कुछ पैम्फलेट भी बांटे जाते हैं जो विभिन्न विकास कार्यक्रमों के सम्बन्ध में तैयार किए जाते हैं। इन प्रदर्शनियों से अनपढ़ व्यक्ति भी बहुत सारी जानकारियाँ प्राप्त करते हैं। आज दूरदर्शन का विभिन्न विकास कार्यक्रमों को जनता तक पहुंचाने में एक महत्वपूर्ण स्थान है। यह लोक सम्पर्क का एक अत्याधिक महत्वपूर्ण एवं एंव विश्वसनीय साधन है। दूरदर्शन के माध्यम से विकासात्मक कार्यक्रमों को विभिन्न क्षेत्राों में लागू करने से सम्बन्धित विशेषज्ञों के द्वारा बहुत सारी जानकारी आमने–सामने की स्थिति में जनता को प्रदान की जाती है। जनता से आपेक्षित सहयोग की अपील भी की जाती है ताकि इन कार्यक्रमों को सफल बनाया जा सके। विकास से जुड़ी महत्वपूर्ण समस्याओं पर विशेषज्ञों के परिसंवाद, गोष्ठियाँ एंव चर्चाएं भी दूरदर्शन पर आयोजित की जाती हैं।

संदर्भ सूची :–

सुमित्रा मोहन, इंडिया पॉलिसी यंड डेवलपमेंट, टाटा मैग्रा हिल पब्लिकशन्स, चेन्नई, पृ. 153–154

प्रदीप सचदेवा, भारत में स्थानीय सरकार, पीयरसन पब्लिकशन, नई दिल्ली, पृ 178–179

अमर्त्य सेन, भारत विकास की दिशाएं, राजपाल एंड सन्स पब्लिकेशन, नई दिल्ली, पृ. 210–211

प्रो. आनन्द प्रकाश अवस्थी, विकास प्रशासन, लक्ष्मी नारयण अग्रवाल, आगरा, पृ. 214–215

अभय प्रसाद सिंह, समकालीन भारत में विकास की प्रक्रिया और सामाजिक आंदोलन, ओरियण्ट ब्लैकस्वॉन, हैदराबाद, पृ. 77–78

डॉ. कल्याण प्रसाद वर्मा, सोशल मीडिया और सामाजिक सरोकार, साहिल प्रकाशन, जयपुर, पृ. 54–55

डॉ. डी. एस. बघेल, डॉ. किरण बघेल, सामाजिक परिवर्तन एवं विकास, कैलाश पुस्तक सदन, भोपाल, पृ. 297–298

प्रो. पंकज बी. सोलंकी, डॉ. नयरेश ए. गढ़वी, सामाजि विकास का इतिहास, जेटीएस पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, पृ. 31–31

राम आहूजा, सामाजिक समस्या, रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर, पृ. 233–234,

जी. एल. शर्मा, सामाजिक मुद्दे, रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर, पृ. 446–448

एन. सी. आर. टी, भारत में सामाजिक परिवर्तन एवं विकास, एनसीआरटी, नई दिल्ली, 11–12

के. एल. शर्मा, भारतीय सामाजिक संरचना, एवं परिवर्तन, रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर, 283–284